SAINATH UNIVERSITY

MA HINDI

SYLLABUS BOOKLET
YEAR - I TO II

MASTER OF ART – HINDI
(M.A – H)

2012 ONWARDS

SYLLABUS
MASTER OF ART – HINDI
YEAR – I

ADHUNIK KAVYA

Sub. Code: MAH-110

Total Marks: 100

आधुनिक काव्य

1. कामायनी

जयषंकर प्रसाद चिंता,श्रद्धा,लज्जा सर्ग केवल

2. राम की षक्ति–पूजा

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

3. रष्मिबन्ध

सुमित्रा नन्दन पंत पहली दस कविताएँ

4. सन्धिनी

महोदवी वर्मा पहली दस कविताएँ

5. कवितान्तर

सम्पादकीःजगदीष गुप्ता अग्नि,षमषेर और मुक्तबोध केवल

6. हम कौन थे

मैथिलीषरण गुप्त, प्रकाषनःलोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद

7. साकेत

मैथिलीषरण गुप्त

8. कुरूक्षेत्र

रामधारी सिंह दिनकर

SYLLABUS
MASTER OF ART – HINDI
YEAR – I

ADHUNIK GADYA AND NATAK

Sub. Code: MAH-120

आधुनिक गद्य एवं नाटक

1. चिन्तामणी

आचार्य रामचन्द्र षुक्ल

साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्रयवाद, उतसव, काव्य में लोकमंगल की भावना

2. स्कन्दगुप्त

जयषंकर प्रसाद

3. अतीत का चलचित्र

महोदेवी वर्मा

4. एकांकी कुंज

आध्याप्रसाद द्विवेदी द्वारा कैलाषनाथ पांडे को सम्पादित, लोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद द्वारा प्रकाषित

केवल जानकारी हेतु उपयोगी किताबें

5. कथामानस

राकेष गुप्ता तथा रिषि कुमार चर्तुवेदी

6. गोदान

प्रेमचन्द्र

7. मैला आंचल

फणीष्वरनाथ रेणु

8. महाभोज

रेणु भंडारी

9. षेखर एक जीवनी

आग्नेय

SYLLABUS
MASTER OF ART – HINDI
YEAR – I

HINDI SAHITYA KA ITIHAS

Sub. Code: MAH-130 \

हिंदी साहित्य का इतिहास

1. काल–विभाजन एवं नामकरण

आदिकाल–

नामकरण की समीचीनता, आदिकाल एवं आदिकालीन साहित्य, आदिकालीन साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, आदिकाल की प्रवत्तियॉ अथवा विषेपताऍ, रासो साहित्य हिंदी पर अपभ्रंष का प्रभाव, पथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता ।

भक्तिकाल –

भक्तिकाल की परिस्थितियॉ, ज्ञानमार्गी षाखा अथवा काव्य की विषेपताऍ, भारत में सूफी प्रेमाख्यानकों का आरम्भ, राम–भक्ति काव्य, राम–भक्ति साहित्य की विषेपताऍ, कण्ण–भक्ति काव्य, कण्ण–भक्ति–काव्य की प्रमुख प्रवत्तियॉ एवं विषेपताऍ, भक्तिकाल की सामान्य विषेपताऍ, हिंदी–साहित्य का स्वर्ण युग–भक्ति–काल, भक्ति–काल के प्रमुख कवि –कबीर, मलिक मुहम्मद जायसी, सूदरदास,तुलसीदास, अप्अछाप ।

रीतिकाल–

रीतिकालः नामकरण, रीतिकाल की परिस्थितियां, रीतिकाल की विषेपताऍ, रीतिबद्व काव्यधारा की प्रमुख प्रवत्तियॉ, रीतिकालीन गद्य साहित्य, रीतिकालीन कवियों की देन, हिंदी के रीतिकालीन आचार्य तथा उनकी देन ।

आधुनिक काल –

आधुनिक काल की परिस्थितियॉ, आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवत्तिया, आधुनिक काव्य की विषेपताऍ, भारतेन्दु युग की प्रवत्तियॉ, द्विवेदी युग की प्रवत्तियॉ, छायावाद, छायावाद के प्रमुख कवि ओर काव्य, छायावादी कविता की प्रमुख विषेपताऍ, कला–पक्षीय विषेपताऍ, प्रगतिवाद, प्रगतिवाद के प्रमुख कवि और काव्य, हिंदी का प्रगतिवादी गद्य–साहित्य, प्रगतिवादी कविता की विषेपताऍ या प्रवपत्तियॉ, रहस्यवाद, प्रयोगवाद, प्रयोगवाद कतिवा की प्रमुख प्रवत्तियॉ, नयी कविता ।

2. हिंदी गद्या का विकास

भारतेन्दु युग, छायावादी युग, षुक्ल युग ।

3. हिंदी उपन्यास का उदभव और विकास

उदभव, विकास हिंदी उपन्यास की सामान्य प्रवत्तियॉ ।

4 हिंदी के आंचलिक उपन्यास

5 हिंदी नाटक का विकास और प्रवत्तियॉ

गोपालचन्द्र का नहुप, भारतेन्दु के नाटक, भारतेन्दु के सहयोगी, जयषंकर प्रसाद–युग ओर हिंदी नाटक का विकास, प्रसाद–युग के अन्य नाटककार, प्रसादोत्तर युग ।

6 हिंदी कहानीः उदभव और विकास

हिदी की पहली मौलिक कहानी, हिंदी कहानी की सामान्य प्रवत्तियॉ

7 हिंदी निबन्ध : उदभव और विकास

भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, नवीन युग, हिंदी निबन्ध की प्रमुख प्रवत्तियॉ ।

8 हिंदी एकांकी : परम्परा और बदलते रूप

9 स्वातन्त्रयोत्तर हिंदी नाटक

10 हिदी महाकाव्य

11 हिंदी खण्डकाव्य

12 हिंदी गीतिकाव्य

13 प्रेमचन्दोत्तर हिंदी उपन्यास

14 हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास

15 गद्य रचना की लघु विधाएँ

ध्वनि नाटक, रेडियो वार्ता, यात्रा–साहित्य, रिपोर्ताज, गद्य काव्य/गद्यगीत ।

17 हिंदी समालोचन

18 हिंदी राष्टभाशा

19 विविध रचनाकरों से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण प्रष्न

कबरी का सामाजिक व्यक्तित्व

सूर का युगबोध और उनकली दप्टि

तुलसी का युग बोध

प्रेमचन्दः सही मूल्यांकन की तलाष

बाबू भारतेन्दु हरिषचन्द्र

महावीरप्रसाद द्विवेदी

आचार्य रामचन्द्र षुक्लः एक ऐतिहासिक सन्दर्भ

राप्टकवि की राप्ट चेतना

जयषंकर प्रसाद

सुमित्रानंदन पन्त

रामधारीसिंह दिनकर

श्रीमती महादेवी वर्मा

SYLLABUS
MASTER OF ART – HINDI
YEAR – I

ANUVAD AND KARYALYI HINDI

Sub. Code: MAH-140

अनुवाद एवं कार्यालयी हिंदी

1. अनुवाद

ष्षब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ ओर इतिहास, अनुवाद की परिभाशा , अनुवाद का महत्व,अनवुाद कला है या विज्ञान ? अनुवादक के गुण, अनुवाद के प्रकार, अनुवाद और भाशा विज्ञज्ञन, अनुवाद की समस्याएँ मुहावरों के अनुवाद की समस्याएँ , पारिभापिक ष्षब्दावली की समस्याएँ, साहित्य का अनुवाद, वेज्ञानिक साहित्य का अनुवाद, नाटक का अनुवाद, उपन्यास का अनुवाद, सफल अनुवाद के आवययक गुण, पत्रकारिता के अनुवाद की समस्याएँ बेंकिग साहित्य का अनुवाद, विधि–साहित्य का अनुवाद, प्रायोजनमूलक हिंदी –स्वरूप एवं विकास, प्रयोग, राजबंस हिंदी–राजबंस अधिनियम, राजबंस–राप्टभाशा –संपर्क भाशा ।

2. कार्यालयी हिंदी

स्वरूप, साधन और प्रकिया, कार्यालयी ष्षब्दावली–अंग्रेजी, हिदी , कार्यालयी साहित्य का अनुवाद, सरकारी पत्र–व्यवहार में काम आने वाले वाक्य–हिंदी और अंग्रेजी , सरकारी कार्यालयों के नाम–पदनाम, कार्यालयों में प्रयुक्त पारिभपिक षब्दावली।

3. आलेखन और टिप्पण

आलेखन या प्रारूपण, सरकारीकार्यालयों में प्रारूपण विधि, सरकारी पत्राचार के विभिन्न रूप – सरकारी पत्र–परिपत्र अनौपचारिक टिप्पणी, कार्यालयी आदेष, अनुस्मारक, टिप्पण, टिप्पण का महतव, सचिवालय की कार्यविधि, कार्यालयों में डाक का असादन–पंजीकरण एवं निप्ठारण, असादनों पर कार्यालयी आदेष ।

4. अंग्रेजी–हिंदी अनुच्छेदों की अनुवाद,

कार्यालयी व्यवहार के तकनीकी विपयों का अनुवाद

SYLLABUS
MASTER OF ART – HINDI
YEAR – II

MADHYA KALIN KAVYA

Sub. Code: MAH-210

मध्यकालीन काव्य

1. कबीर आधुनिक सन्दर्भ में

प्रस्तावित अंषः

अ. पदः पहले केवल पन्द्रह पद

ब. साखी दोहे :

1. सदगुरू महिमा को अंग
2. प्रेम बिरह को अंग
3. सुमिरन भजन महिमा को अंग
4. साध महिमा को अंग
5. गुरू–सिक्ख हेरा को अंग
6. दीनता विनती को अंग
7. पीयू पहिचानिबे को अंग
8. स्ंम्ररथि को अंग
9. परचा को अंग
10. सूखिम मारग को अंग
11. पतिव्रता को अंग
12. रास को अंग
13. बैली को अंग
14. सूरतन को अंग

2. विनयपत्रिकाः महाकवि तुलसीदास

उत्तर्राध पद 137 से 186 दोनों प्रकार की

3. भ्रूरगीतसारः सूरदास

प्रस्तावित दोहेः केवल 100 पद

4. बिहारी नवनीत

5. रसखान और घनानंद

प्रस्तावित पदः केवल 50 सवैया रसखान के व केवल 50 छंद घनानंद के

SYLLABUS
MASTER OF ART – HINDI
YEAR – II

MAHA KAVI TULSI DAS

Sub. Code: MAH-220

अध्याय

1. गोस्वामी श्री तुलसीदास : जीवन परिचय
2. तुलसीदास जी की काव्य–कला
3. तुलसीदास जी की भक्ति–भावना
4. तुलसीदास जी की विनय–भावना
5. तुलसीदास जी की दार्षनिक विचारधारा
6. तुलसी की युगीन परिस्थितियां
7. तुलसी की काव्य–भाशा
8. तुलसी की समन्वय–भावना
9. सूर–सूर तुलसी षषि
10. रामचरित मानसःएक सफल महाकाव्य
11. तुलसीःदार्षनिक कवि
12. तुलसी का प्रकति–चित्रण
13. रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड का महतव
14. विनय–पत्रिका मेंभकित का रूप
15. चरित्र–चित्रण एवं षील–निरूपण की दप्टिसे अयोध्या–काण्ड का महत्व
16. उत्तरकाण्डः एक परिषीलन
17. कवितावलीःएक परिचय
18. कवितावलीः एक प्रतिपाद्य
19. कवितावलीः काव्य–रूप
20. कवितावली की भाशा
21. कवितावली में रस–अलंकार
22. कवितावली : युग–सन्दर्भ
23. विनय–पत्रिकाःएक परिचय

24. विनय–पत्रिका में राम
25. विनय–पत्रिका में भक्ति
26. बरवे रामायणः एक परिचय
27. रामचरितमानस उततरकाण्ड
28. कवितावली बालकाण्ड

SYLLABUS
MASTER OF ART – HINDI
YEAR – II

BHASHA VIGYAN KE SIDHANT

Sub. Code: MAH-230

भाशा विज्ञान के सामान्य सिद्वान्त तथा हिंदी भाशा का इतिहास

भाशा विज्ञान

1. भाशा , भाशा –विज्ञान की परिभाशा , भाशा –विज्ञान या कला, भाशा विज्ञान के अंग, भाशा ओं का वर्गीकरण आकतिमूलक और पारिवारिक, भाशा –विज्ञान व सामान्य विज्ञान का सम्बन्ध, भाशा का विाकस, परिवर्तन और कारण, भाशा के विभिन्न रूप ।
2. भाशा –विज्ञान का इतिहासः भारतीय और पाष्चातय ।
3. ध्वनि विज्ञानः ध्वनि यंत्र, ध्वनियों का वर्गीकरण ।
4. स्वर और व्यंजन, स्वरों का वर्गीकरण, मानक स्वर, व्यंजनों का वर्गीकरण, अक्षर विभाजन, ध्वनि परिवर्तन और उनके कारण ।
5. रूप् परिवर्तनः उनके कारण, रूप् परिवर्तन और ध्वनि परिवर्तन में अंतर, रूप् ग्राम और स्वरूप, रूप ग्राम विज्ञान ।
6. अर्थ विज्ञानः अर्थविज्ञान, अर्थविज्ञान की उत्पत्ति, अर्थ परिवर्तन और उसकी दिषाएं, परिवर्तन के कारण
7. वाक्य विचार, वाक्यों के प्रकार, देवनागरी लिपि का उदभव और विकास

हिंदी भाशा का इतिहास–ः हिंदी भाशा का इतिहास–ः

1. हिदी भाशा के इतिहास की भूमिका
2. हिदी ध्वनि–समूल और उनका इतिहास
3. हिंदी ष्षब्द भंडार
4. हिंदी में विदेषी ध्वनियॉ और उनमें परिवर्तन
5. उपसर्ग, प्रत्यय, स्वरघात, मानक स्वर
6. संख्यावाचक विषेपण, संज्ञा, सर्वनाम, लिंग
7. वचन, कारक, किया, संयुक्त किया, सहायक किया

8. कदंत और उनके प्रकार, अव्यव और उनके प्रकार
9. देवनागरी लिपि का उदभव और विकास

SYLLABUS
MASTER OF ART – HINDI
YEAR – II

KAVYA SHASTRA

Sub. Code: MAH-240

खंड 1. आलोचना के सामान्य सिद्वान्त

1. आलोचना की परिभाशा , स्वरूप, प्रकार
2. सफल आलोचक के गुण
3. साहित्य के विकास में आलोचना का योगदान
4. हिंदी आलोचना का विकास
5. हिंदी के आलोचक

   अ. आचार्य षुक्ल

   ब. नन्द दुलारे बाजपेई

   स. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

   द. डॉ नगेन्द्र

   ड. डॉ. राम विलास षर्मा

6. साहित्य की विविध विधाएं, स्वरूप लक्षण

काव्य–मुक्तक, प्रबन्ध, महाकाव्य खंडकाव्य।

गद्य– उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबन्ध।

काव्य के उपादान– कल्पना, म्बि, प्रतीक, मिथक, षब्द षक्ति

खंड 2. भारतीय काव्यषास्त्र

1. भारतीय आलोचना केविकास की रूपरेखा
2. भारतीय आलोचना के मानदण्ड

रस,अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति , औचित्य, इन छःसम्पन्नदोयां का विस्तत अध्ययन

खंड 3. पाष्चातय काव्यषास्त्र

9. पाष्चातय काव्य ष्षास्त्र के विकास की रूपरेखा

10. निम्न आलोचकों का विस्तत अध्ययन

प्लेटो,अरस्तु लौंगिनस, वर्डसवर्थ कॉलरिज, मैथ्युआर्नल्ड,ईलियट, आई.ए. रिचर्ड,क्रोचे ।